

# एनएसआई व आईआईएमआर मक्के से निकालेंगे इथेनॉल आईआईएमआर के निदेशक ने एनएसआई में इथेनॉल निकालने की मशीनों को किया अवलोकन

अमृत विचार, कानपुर

## तैयारी

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान (एनएसआई) और भारतीय मक्का अनुसंधान संस्थान (आईआईएमआर) मिलकर मक्के से इथेनॉल निकालेंगे। दोनों संस्थान 2025 तक पेट्रोल में मिश्रण के लिए आवश्यक 1016 करोड़ लीटर इथेनॉल के उत्पादन पर कार्य करेंगे। सोमवार को आईआईएमआर के निदेशक डॉ. सुजय रक्षित ने एनएसआई में आकर इथेनॉल तैयार करने की मशीनों को देखा। शैक्षिक और

● 2025 तक पेट्रोल में मिश्रण के लिए 1016 करोड़ लीटर इथेनॉल की आवश्यकता

शोध कार्यों का अवलोकन किया। एनएसआई निदेशक प्रो. नरेन्द्र मोहन ने बताया कि देश में चावल और गेहूँ के बाद सबसे बड़ा उत्पादन मक्के का है। चीनी मिलें गन्ने और उसके अवशेष से इथेनॉल तैयार कर रही हैं। 2025 तक पेट्रोल में इथेनॉल की ब्लेंडिंग के लिए इथेनॉल का उत्पादन बढ़ाया जाना है। इसके



एनएसआई निदेशक प्रो. नरेन्द्र मोहन से जानकारी लेते हुए आईआईएमआर के निदेशक डॉ. सुजय रक्षित।

लिए मक्का अच्छा स्रोत साबित हो सकता है। डॉ. सुजय रक्षित ने बताया कि इस तकनीक से किसानों की दोगुनी आय करने

## एनएसआई में पेपरलेस वर्किंग शुरू

एनएसआई में सोमवार से पेपरलेस वर्किंग शुरू हो गई। निदेशक प्रो. नरेन्द्र मोहन ने बताया कि संस्थान में सभी कार्य ऑनलाइन हो रहे हैं। किसी तरह का ऑर्डर, नोटिस और सूचनाओं का आदान प्रदान डिजिटल माध्यम से किया जा रहा है।

की दिशा में कार्य किया जा सकता है। जल्द ही एनएसआई और आईआईएमआर के बीच करार किया जाएगा।

# मक्के से इथेनॉल उत्पादन को देंगे बढ़ावा

कानपुर (एसएनबी)। देश में पेट्रोल में सम्मिश्रण के लिए इथेनॉल की बढ़ती मांग को पूरी करने के लिए मक्के से इथेनॉल उत्पादन को बढ़ावा देने पर कार्य किया जायेगा। इसके लिए राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर व भारतीय मक्का अनुसंधान संस्थान, लुधियाना साथ मिलकर काम करेंगे। इसको लेकर दोनों संस्थानों में सहमति बन चुकी है। इस महत्वकांक्षी कार्यक्रम को अंतिम रूप देने के लिए भारतीय मक्का अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. सुजय रक्षित ने यहां राष्ट्रीय शर्करा संस्थान का दौरा किया।

मक्के को इथेनॉल उत्पादन के लिए एक महत्वपूर्ण कच्चा माल माना गया है। क्षेत्र व उत्पादन के मामले में भारत में मक्का, चावल और गेहूँ के बाद तीसरी सबसे महत्वपूर्ण अनाज की फसल है। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान के निदेशक प्रो. नरेन्द्र मोहन बताते हैं कि लाभकारी रोजगार व किसानों की आय बढ़ाने के दृष्टिगत मक्का, चावल व गेहूँ की तुलना में अधिक मददगार हो सकती है। उन्होंने कहा कि फिनहाल मक्के का ज्यादा उपयोग औद्योगिक कच्चे माल के अलावा भोजन व चारे के रूप में किया जाता है। इधर, इसका उपयोग जैवइथेनॉल उत्पादन के लिए भी शुरू किया गया है। उनके मुताबिक देश में 2025 तक पेट्रोल में सम्मिश्रण के लिए करीब 1016 करोड़ लीटर इथेनॉल की आवश्यकता अनुमानित है। उक्त लक्ष्य के सापेक्ष 466 करोड़ लीटर इथेनॉल चावल व मक्का से प्राप्त करने की



मक्के से इथेनॉल उत्पादन को बढ़ावा देने के काम में भारतीय मक्का अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. सुजय रक्षित ने किया राष्ट्रीय शर्करा संस्थान का दौरा, साथ में निदेशक प्रो. नरेन्द्र मोहन।

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान ने मिलाया भारतीय मक्का अनुसंधान संस्थान से हाथ

वर्ष 2025 तक देश में पेट्रोल में सम्मिश्रण के लिए चाहिए 1016 करोड़ लीटर इथेनॉल

आवश्यकता है। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान के दौरा पर आये भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद-

भारतीय मक्का अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. सुजय रक्षित ने बताया कि मक्का अनुसंधान संस्थान फसल सुधार के अलावा बेहतर उत्पादन और संरक्षण के लिए स्थान विशिष्ट व जलवायु अनुरूप प्रौद्योगिकियों के विकास में शामिल है। राष्ट्रीय स्तर पर मक्का की बढ़ती मांग की चुनौतियों का सामना करने के लिए योजनाएं चलाई जा रही हैं। उन्होंने कहा कि विकसित मक्का की किस्मों का परीक्षण राष्ट्रीय शर्करा संस्थान कानपुर में इथेनॉल उत्पादकता के लिए किया जायेगा।

## शर्करा संस्थान ने शुरू की ई-ऑफिस प्रणाली

कानपुर (एसएनबी)। डिजिटल दुनिया से कदमताल करते हुए पेपरलेस कामकाज की दिशा में कदम आगे बढ़ते हुए राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर में सोमवार से ई-ऑफिस प्रणाली को प्रभावी किया गया। ई-ऑफिस प्रणाली के क्रियान्वयन के साथ पारंपरिक भौतिक फाइलें अब सभी नोटिंग व आर्डर के साथ डिजिटल स्वरूप में आ जायेंगी। संस्थान में इस प्रणाली को भारत सरकार के उद्यम नेशनल इंफार्मेटिक्स सेंटर (एनआईसी) द्वारा विकसित किया गया है।

संस्थान में ई-ऑफिस प्रणाली के शुभारंभ के बाद निदेशक प्रो. नरेन्द्र मोहन ने कहा कि संस्थान पिछले एक साल से इस प्रणाली को लागू करने के लिए प्रयासरत था, किंतु कोविड से संबंधित समस्याओं के कारण मामला कुछ विलंबित हुआ। ई-ऑफिस प्रणाली से अब फाइलों की तेजी से आवाजाही के साथ ही पारदर्शिता आयेगी व बेहतर ढंग से कामकाज हो सकेगा। इससे स्टेशनरी पर होने वाले खर्च और भविष्य के लिए अभिलेखों को संरक्षित करने के प्रयासों में भी वचत होगी।

# पेट्रोल में मिलाने के लिए मक्के से भी बनाएंगे इथेनॉल

भारतीय मक्का संस्थान और  
एनएसआई मिलकर करेंगे काम

संस्थान के निदेशक ने  
एनएसआई का दौरा किया

माई सिटी रिपोर्टर

कानपुर। मक्के की फसल उगाने वाले किसानों की आय अब और बढ़ेगी। मनुष्यों के भोजन और पशुओं के चारे दोनों में इस्तेमाल होने वाले मक्के से इथेनॉल भी बनेगा। यह इथेनॉल पेट्रोल में मिलाया जाएगा। इसके लिए नेशनल शुगर इंस्टीट्यूट (एनएसआई) और भारतीय मक्का अनुसंधान संस्थान, लुधियाना मिलकर काम करेंगे।

संस्थान के निदेशक डॉ. सुजय रक्षित ने सोमवार को एनएसआई का दौरा किया। डॉ. रक्षित ने बताया कि विकसित मक्का की किस्मों का परीक्षण एनएसआई में किया जाएगा। मक्के की किस्मों से इथेनॉल उत्पादकता का परीक्षण होगा। उत्पादन के मामले में मक्का, चावल और गेहूं के बाद

एनएसआई में डिजिटल फाइलें बनेंगी : नेशनल शुगर इंस्टीट्यूट में पेपरलेस कामकाज होगा। सोमवार से इंस्टीट्यूट में ई-ऑफिस प्रणाली लागू कर दी गई है। अब पारंपरिक भौतिक फाइलें नोटिंग और आर्डर के साथ डिजिटल रूप में परिवर्तित की जाएंगी। इस प्रणाली को के ड्र सरकार के उद्यम नेशनल इंफोर्मेटिक्स सेंटर (एनआईसी) ने विकसित किया है। ई-ऑफिस प्रणाली का उद्घाटन निदेशक प्रोफेसर नरेंद्र मोहन ने किया। उन्होंने कहा कि अब समय की मांग को देखते हुए फाइलें तेजी से निस्तारित होंगी और पारदर्शी व्यवस्था रहेगी। स्टेशनरी की खरीद में आने वाला खर्च बचेगा। रिकार्ड को अच्छी तरह संरक्षित किया जा सकेगा।



मक्का अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. सुजय रक्षित को तकनीक के संबंध में जानकारी देते एनएसआई के निदेशक प्रोफेसर नरेंद्र मोहन।

भारत में तीसरी सबसे महत्वपूर्ण अनाज की फसल है। एनएसआई के निदेशक प्रोफेसर नरेंद्र मोहन ने बताया कि इथेनॉल के उत्पादन के लिए मक्का को महत्वपूर्ण कच्चा माल माना गया है।

वर्ष 2025 तक पेट्रोल में मिलाने के लिए कुल 1016 करोड़ लीटर इथेनॉल की जरूरत होगी। चावल और मक्का से 466 करोड़ लीटर प्राप्त करने की आवश्यकता है।



LUCKNOW | TUESDAY | AUGUST 23, 2022

## NSI, ICAR-IIMR to work jointly to promote ethanol production from maize

PNS ■ KANPUR

Director, ICAR-Indian Institute of Maize Research (IIMR), Ludhiana, Dr Sujay Rakshit, while addressing a special function at the institute on Monday said National Sugar Institute (NSI), Kanpur and ICAR-Indian Institute of Maize Research, Ludhiana shall work jointly to promote production of ethanol from maize.

He said the two institutes have already reached an understanding in this matter. He said the two institutes had already worked out their future plans and said his arrival was just to give a final shape to the ambitious programme. He said maize had been considered as an impor-

tant raw material for production of ethanol and out of the total requirement of 1016 crore litre of ethanol for blending in petrol by 2025, about 466 crore litre was required to be obtained from rice and maize. Director, NSI, Prof Narendra Mohan, said maize was the third most important cereal crop in India after rice and wheat in terms of area and production. He said, however, to provide gainful employment and doubling farmers' income maize held higher potential than rice and wheat. He said maize was widely used as food, feed and fodder besides its use as industrial raw material and now it was being used for bio-ethanol production.



Talking about ICAR-Indian Institute of Maize Research, Sujay Rakshit informed that the institute besides crop improvement, is also involved in development of location-specific/climate resilient technologies for improved production and protection practices. TNN

[illegible]